Research Paper | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 1 | JANUARY 2023

आधुनिक भारत के निर्माण में स्वामी विवेकानंद के विचारों का योगदान : एक अध्ययन

राजेश कुमार मालविया [1]

[1] सहायक आचार्य इतिहास, विद्या सम्बल योजना, अतिथि शिक्षक, राजकीय महाविद्यालय, जैतारण, जिला पाली।

ABSTRACT:

महामना स्वामी विवेकानन्द एक महान समाज सुधारक और उच्चकोटि के दार्शनिक थे। समाज के प्रति संवेदनशील वह उन दोषों से पूर्णरूप से अवगत थे जो कि हिन्दू समाज की जड़ों को खोखला कर रहे थे और वह उनका अन्त करने के लिए सदैव चिंतित रहते थे। वह स्त्रियों की स्थिति को ऊँचा उठाना, विदेश यात्रा के ऊपर लगे हुए सामाजिक प्रतिबन्धों को हटाना तथा अस्पृश्यवाद के धर्म का अन्त करना चाहते थे किन्तु उनकी पद्धति अन्य सुधारकों से भिन्न थी दूसरे सुधारक यत्र यत्र छोटे-मोटे सुधारों के हामी थे, ध्वंसात्मक नहीं। यह रचनात्मक थी क्योंकि वह बुराई का उन्मूलन शिक्षा के द्वारा करना चहाते थे। शक्ति के द्वारा नहीं।

KEYWORDS:

स्वामी विवेकानंद, समाज सुधार, विचारधारा, शिक्षा, राष्ट्र, स्त्री, अभ्युदय

विषय प्रवेश :-

सामाजिक जागरूकता के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण :-

स्वामी जी की समाज सुधार की पद्धति के अनुसार जनता को शिक्षित किया जाना सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य है। स्वामी विवेकानन्द ने समाज सुधार की जिस सिंह गर्जना से अपनी मान्यताओं को प्रस्तुत किया था उससे भारत के स्वाभिमानी होने विश्व को कुछ दे पाने की सामर्थ्य रखने वाले देश की रूप रेखा सभी के सम्मुख स्पष्ट हुई थी। इस संन्यासी धर्म पुरुष ने प्रत्यक्षतः न राजनीति के और न जीवन के अन्य क्षेत्रो में परिवर्तन के लिए प्रयास किए वरन् जनमानस के हृदय परिवर्तित करने के लिए निरन्तर कटिबद्ध रहे। यही कारण है कि सुभाषचन्द्र बोस जैसे संघर्षशील राजनीतिज्ञ उनके प्रति नतमस्तक हुए। और यह स्वामी जी का बहुविध सफलताओं का प्रतीक है। सुभाष की वाणी में उनके प्रति श्रद्धा थी। स्वामी विवेकानन्द का धर्म राष्ट्रीयता को उत्तेजना देने वाला धर्म था। नई पीढ़ी के लोगों में उन्होंने भारत के प्रति भक्ति जगाई, उसके अतीत के गौरव एवं भविष्य के प्रति आस्था उत्पन्न की। उनके उदगारों से लोगों में आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के भाव जगे हैं[i]।

विवेकानन्द की अनुभूति एक साधु और संन्यासी की अनुभूति नहीं थी। उन्होंने संसार की समस्याओं पर सदैव चिंतन किया और उसके निदान खोजने का प्रयास किया। क्रांतिकारी कदमों का प्रतिशोध कितना भयंकर है इसका प्रमाण उन्होंने अमरीका की दास प्रथा से दिया था जिसके उन्मूलन के लिए दीर्घावधि संघर्ष हुआ। किन्तु जिसकी जड़े उस संघर्ष के बाद विषाक्त हो गई। स्वतंत्रता की प्राप्ति दास लोगों को भी हो इसके लिए वहाँ अपार संघर्ष हुआ। लेकिन दास लोग वहाँ दासता से मुक्त नहीं हुऐ। तब उन्होंने उस पद्धति का अनुमोदन किया जिसे शंकर, रमानुज, नानक, चैतन्य तथा कबीर सरीखे महान् सुधारकों ने अपनाया था।

स्वामी विवेकानन्द के विश्व मंच पर अभ्युदय होने के साथ भारतीय जीवन में आशा और विश्वास की एक ऐसी ज्योति प्रज्जवलित हुई जिसने उसे बन्धनों से मुक्त कर दिया। विश्व के सम्मुख स्वामी जी का यह आशावाद कितना महत्वपूर्ण है। कि भारत को धर्म की आवश्यकता नहीं, धर्म की शिक्षा वह दूसरों को देने में पूर्ण सामर्थ्यवान है। उस पर कोई हीनता के दोष भी नहीं लगा सकता क्योंकि वह विश्व विजय की पताका अपने हाथ से फैहरा चुका है।

स्पेंन्सर के समान समाज के सम्बन्ध में विवेकानन्द की भावना सावयवी थी[ii]। उनके अनुसार अनेक व्यक्तियों का समूह समष्टि कहलाता है और अकेला व्यक्ति उसका एक भाग है। व्यक्ति की भाँति समष्टि का भी अपना आंगिक जीवन है, उसका भी विकासशील मस्तिष्क और आत्मा है। सामाजिक प्रगति तभी सम्भव है जब उसके घटक कुछ बलिदान करें क्योंकि त्याग अथवा बलिदान किए बिना समष्टि के कल्याण की कामना करना व्यर्थ है।

कुप्रथाओं का निवारण :-

स्वामी जी ने कुप्रथाओं के निवारण के लिए अथक प्रयास किये। सामाजिक जीवन में परिशुद्धता लाने के लिए प्रत्येक मानव समाज सुधारक के प्रति आभारी होता है। समाज सुधारकों का कुछ समय के लिए विरोध भले ही हो किन्तु वह सत्कर्म की ज्योति को जलाने के लिए कष्टों को सहते हुए अपना कार्य करते हैं। बाल विवाह की प्रथा स्वामी जी के काल में भी थी। सरकार ने ऐसा कानून भी पास कर दिया था कि 12 वर्ष से कम उम्र की लड़कियों का विवाह दण्डनीय अपराध माना जायेगा किन्तु धर्म के ठेकेदारों ने इस कानून के धर्म को विपरीत कहना प्रारम्भ कर दिया।

स्वामी विवेकानन्द ने बाल विवाह की भर्त्सना की और कहा "जिस प्रथा के अनुसार अबोध बालिकाओं का पाणिग्रहण होता है, उसके साथ में किसी प्रकार के सम्बन्ध रखने में असमर्थ हूँ। बाल-विवाह से असामयिक सन्तानोत्पति होती है। और अल्पायु में सन्तान धारण करने के कारण हमारी स्त्रियाँ अल्पायु होती हैं, उनकी दुर्बल और रोगी सन्तान देश में रोगियों की संख्या बढ़ाने का कारण बनती है। आज घर-घर इतनी अधिक विधवाएँ पाये जाने का मूल कारण बाल-विवाह ही है, यदि बाल विवाहों की संख्या घट जाये तो विधवाओं की संख्या भी स्वयंमेव घट जायेगी"[iii]।

स्त्रियों के इस रूढ़िवादी स्वभाव में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा का प्रसार आवश्यक है। जब समाज के परिवर्तनों को स्त्रियाँ समझने लगेंगी तब उन्हें इस बुराई के निराकरण में हम सरलता के साथ सहयोगी बना सकते हैं।

आध्यात्मिकता का सुष्ठ एवं तर्क संगत प्रचार :-

स्वामी विवेकानन्द मूर्ति पूजा के प्रत्यक्ष विरोधी नहीं थे और वह यह भी जानते थे कि, प्रत्यक्ष रूप से मूर्ति पूजा से मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। फिर भी इसकी निन्दा नहीं की जा सकती क्योंकि यह हमारी संस्कृति का भावनात्मक पहलू है। मूर्तिपूजा हमारे आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया में एक प्रारम्भिक अवस्था है। मूर्ति पूजा में निहित भावना यही है कि हम उसको परमात्मा नहीं बल्कि परमात्मा की केवल प्रतिमा मानकर पूजते है। उन्होंने मूर्ति पूजा को धर्म के लिए एक सहायक तत्व माना जो प्राथमिक अवस्था में आवश्यक है, सदैव के लिए नहीं। यह मानव स्वभाव का विधान है[iv]। किसी प्रतिमा या मूर्ति पूजा से प्रत्यक्ष रूप से मुक्ति पाना सम्भव नहीं है। अतः स्वामी विवेकानन्द इसकी निन्दा भी नहीं करते, क्योंकि यह मन को ईश्वर की अनुभूति के लिए तैयार करती है। वह इसको हमारे आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया में एक प्रारम्भिक अवस्था मानते हैं। आध्यात्मिक विकास असत्य से सत्य की ओर जाना नहीं वरन् एक निम्नतर अथवा हीनतर सत्य से एक उच्चतर अथवा श्रेष्ठतर सत्य की और प्रगति करना है। परमात्मा की अनुभूति के लिए प्रतिमा पूजा वैसी ही है जैसा कि शैशवावस्था तथा बाल्यवस्था, वृद्धावस्था का परिपक्व बुद्धि के लिए है। शास्त्रों का कहना है कि बाह्य पूजा भौतिक पूजा निम्नतम अवस्था है, ऊंचा उठने के लिए हमें संघर्ष करना है[v]।

उन्होंने समाज को प्रगति की ओर ले जाने वाले साधनों की चर्चा भी की। इनमें से प्रमुख है:-

सर्वप्रथम उन्होंने प्रगति के लिऐ आचरण पर विशेष महत्व दिया है। जहाँ सीखने को मिले सीखना चाहिए। कूपमण्डूक बने रहने की प्रवृति हमें पीछे की और धकेलती है और आचरण प्रगति के महान शिखर पर पहुँचता है।

विवेकानन्द ने अधिकारों की अपेक्षा कर्तव्यों को अधिक महत्व दिया। विश्व के विभिन्न समूहों और वर्गों के अधिकारों परस्पर तनाव और संघर्ष चलता रहता है, लेकिन कर्तव्यों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। उनके मतानुसार निष्काम कर्तव्य करते रहने पर अधिकारों की स्वयं सृष्टि हो जाती है।

"उनके अनुसार सत्य पर आग्रह सफलता की कुंजी होती है।" उन्होंने कहा सतर्क रहो, जो कुछ असत्य है उसे पास न फटकने दो सत्य पर डटे रहो, बस तभी हम सफल होगें शायद थोड़ा अधिक समय लगे पर सफल हम अवश्य होंगे"[vi]।

विश्व का इतिहास हमें यह सिखलाता है कि जहाँ कहीं भी कट्टरता के साथ सुधार किये गये है, एकमात्र परिणाम यह निकला है कि उन्होंने अपने ही उद्देश्य को परास्त कर दिया है। सद् तथा

स्वतन्त्रता की स्थापना के लिऐ उस युद्ध से बड़ी किस उथल-पुथल की आशा नहीं की जा सकती जो कि अमरीका में दास प्रथा के उन्मूलन के लिऐ हुआ था दास लोग आज दासता के उन्मूलन की अपेक्षा सौ गुना खराब स्थिति में है।

स्वामी विवेकानन्द जी मानते हैं कि धर्म हमारे भीतर ही है कोई गुरु या कोई शास्त्र हमें उसकी प्राप्ति में सहायता मात्र दे सकते हैं इसके अतिरिक्त वे और कुछ भी नहीं कर सकते शास्त्र और आचार्यों के प्रति कृतज्ञ रहो, किन्तु देखों ये तुम्हें कहीं बद्ध न कर ले। गुरु को ईश्वर समझकर तुम उनकी उपासना करो; किन्तु स्वाधीन भाव से विचार करो। किसी प्रकार का अन्धविश्वास तुम्हें मुक्ति नहीं दे सकता. तुम स्वयं मुक्ति प्राप्त कर लो ईश्वर के सम्बन्ध में यह एकमात्र धारणा रखो कि वे हमारे नित्य सहायक है[vii]।

कर्मकाण्डों के विषय में विवेकानन्द जी कहते हैं कि जिस धर्म की जड़े-प्रथा और रूढ़ियों में होती है वह दुकानदारी का धर्म हो जाता है। जिसमें ईश्वर साध्य नहीं साधन बन जाता है। "उन्होंने तंत्र पर आधारित कर्मकाण्ड पूर्ण धर्म की बड़ी आलोचना की और कहा कि इसमें गुरु और शिष्या का सुन्दर सम्बन्ध भी गर्हित हो गया है। गुरुवाद हमारे देश में बड़ा चलता हुआ धन्धा है।" इसी प्रकार उन्होंने भोजन और स्नान विधिक विषय में भी पाये जाने वाले अनेकों पाखण्डों की आलोचना कर धार्मिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया क्योंकि धार्मिक कुरीतियों ने ही हमारी राष्ट्रीय एकता को सदा हानि पहुँचाई है। वास्तव में जो धार्मिक प्रवृत्ति के लोग है वे इन झगड़ों में नहीं पड़ते थे जानते हैं कि सभी धर्मो का प्राण एक ही है वे भाषा इत्यादि को लेकर झगड़ा नहीं करते। धार्मिक विविधता स्वाभाविक है। वे मानते हैं कि प्रकृति एक रस है, विविधता अभिव्यक्ति से है नेचर के लिऐ संस्कृत शब्द है प्रकृति जिसका अर्थ है- विभेद सब कुछ एक है; किन्तु विविध रूपों में अभिव्यक्त हुआ[viii]।

स्त्री सम्मान

स्वामी विवेकानन्द का यह अडिग विश्वास था कि प्रत्येक राष्ट्र को अपनी स्त्री जाति का पूरा सम्मान करना है। जो देश जो राष्ट्र स्त्रियों का आदर नहीं करते, वे कभी उन्नति नहीं कर पाये और न भविष्य में ही कर सकेंगें। इस देश में पुरुष और स्त्रियों में इतना अन्तर क्यों समझा जाता है, यह समझना कठिन है। वेदान्त शास्त्र में तो कहा है कि एक ही चिंत सत्ता सर्वभूत में विद्यमान है। तुम लोग स्त्रियों की निन्दा ही करते हो उनकी उन्नति के लिऐ तुमने क्या किया, बोलो तो? स्मृति आदि लिखकर नियम-नीति में आबद्ध करके इस देश के पुरुषों ने स्त्रियों को साक्षात् मूर्ति इन स्त्रियों का उत्थान न होने से क्या तुम लोगों की उन्नति संभव है।

शिक्षा प्रणाली में सुधार

शिक्षा प्रणाली की उपरोक्त कमियों को दूर करने के लिऐ स्वामी विवेकानन्द जी सदैव प्रयत्नशील रहते थे यह कारण है कि यूरोप और अमरीका के नगरों में सामान्य व्यक्तियों के स्तर और शिक्षा को देखकर स्वामी जी के मन में बार बार अपने देशवासियों की दीन-दशा के लिऐ दुःख उत्पन्न होता था। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से समझ लिए कि इस दीन-दशा का कारण उपयुक्त शिक्षा का अभाव है। उन्होंने कहा- शिक्षा से आत्म विश्वास आता है और आत्म विश्वास से अन्तर्निहित ब्रह्म भाव जग उठता है। परन्तु हमारा ब्रह्म भाव क्रमशः निद्रित व संकुचित होता चला जा रहा है[ix]।

जाति व्यवस्था पर कुठाराघात :-

ब्राह्मणों ने तो धर्मशास्त्रों पर एकाधिकार जमाकर विधि-निषेधों को अपने ही हाथ में रखा था और भारत की दूसरी जातियों को नीच कहकर उनके मन में विश्वास जमा दिया था कि वह वास्तव में नीच हैं। "यदि किसी व्यक्ति को खाते, सोते. उठते-बैठते हर समय कोई कहता रहे कि 'तू नीच है' तू नीच है, तो कुछ समय के पश्चात् उसकी धारणा हो जाती है कि मैं वास्तव में नीच हूँ। इसे सम्मोहित (हिप्नोटाइज) करना कहते हैं। मै तो जाति पाँति के मामलों में किसी भी वर्ग के प्रति कोई पक्षपात नहीं रखता क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह एक सामाजिक नियम है और गुण एवं कर्म के भेद पर आधारित है"[x] ।

"शिक्षा और अधिकार के तारतम्य के अनुसार सभ्यता सीखने को सीढ़ी थी वर्ण विभाग यूरोप में बलवानों की जय और निर्बलों की मृत्यु होती है। भारत में प्रत्येक सामाजिक नियम दुर्बलों की रक्षा करने के लिए ही बनाया गया।" विभिन्न श्रेणियों में विभक्त होना ही समाज का स्वभाव है। प्राचीन भारत ने जिन दो सर्वश्रेष्ठ पुरुषों को जन्म दिया था, वे दोनों ही क्षत्रिय हैं- वे थे कृष्ण और बुद्ध और यह उससे भी अधिक ध्यान देने योग्य बात है कि इन दोनों ही देवमानवों ने लिंग और जाति-भेद को न मानकर सब के लिऐ ज्ञान का द्वार उन्मुक्त कर दिया था[xi]।

राष्ट्रवादी भावना का विकास:-

आगामी पचास वर्षो के लिए हमारा केवल एक ही विचार केन्द्र होगा और वह है हमारी महान् मात्रभूमि भारत। दूसरे सब व्यर्थ के देवताओं को उस समय तक के लिऐ लुप्त हो जाने दो। हमारा राष्ट्र पुरुष केवल यही एक देवता है, जो जाग रहा है, जिसके हर जगह हाथ हैं, हर जगह पैर हैं। हम क्यों इन व्यर्थ के देवताओं के पीछे दौड़े और उस देवता की उस विराट की पूजा क्यों न करें, जिसे हम अपने चारों ओर देख रहे है? जब हम उसकी पूजा कर लेगें, तभी हम दूसरे देवताओं की पूजा करने योग्य बनेगें। ये उदगार जिस उत्कृष्ट राष्ट्र प्रेमी ने व्यक्त किये थे, उसे आज विश्व विवेकानन्द के नाम से जानता है. जिसकी राष्ट्रीय भावना ने देश के तिलक, गाँधी, अरविन्द और सुभाष जैसे महान सपूतों को मात्र भूमि की बलिवेदी पर अपना जीवन उत्सर्गित करने के लिए अनुप्राणित किया था। स्वामी विवेकानन्द आत्मदृष्टा ऋषि होते हुए भी राष्ट्रद्रष्टा युगनायक थे, जिनकी प्रखर दृष्टि भविष्य के अन्धकार को भेदने में समर्थ हुई थी।

स्वदेश की चिंता:-

राजनीतिक विचार को स्वामी विवेकानन्द की दूसरी महत्वपूर्ण देन यह थी कि उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्रीय जीवन में जन साधारण का प्रमुख स्थान है। उनकी देश भक्ति ने जनसाधारण की सेवा सुश्रुषा का रूप धारण किया। उनके मन में यह विचार उठता रहता था कि भारत की पीड़ित तथा दलित जनता में किस प्रकार एक नवीन चेतना उत्पन्न की जाय और उनको एक नवीन लक्ष्य की ओर ले जाया जाये। दीन, दरिद्र, रोगी तथा अपंग की सेवा को वह ईश्वर की उपासना का सर्वोत्तम तथा सर्वोच्च रूप समझते थे। वह जो कि दरिद्र में निर्बल में तथा रोगी में शिव का दर्शन करता है, और यदि वह शिव को केवल प्रतिमा में ही देखता है तो उसकी उपासना प्रारम्भिक श्रेणी की ही है। यदि किसी व्यक्ति ने जाति धर्म अथवा प्रजाति या अन्य किसी प्रकार का भेदभाव किये बिना केवल एक दरिद्र व्यक्ति की उसके भीतर शिव देखते हुऐ, सेवा तथा सहायता की हैं।

स्वधर्म की महत्ता और स्व-संस्कृति के प्रति अनुराग:-

स्वामी विवेकानन्द हिन्दू धर्म के समर्थक थे और उनके अनुसार धर्म तो भारत की नियति के साथ जुड़ा हुआ है। हिन्दू धर्म का समर्थन इस आधार पर किया कि वह नैतिक मानववाद और आध्यात्मिक आदर्शवाद का एक सर्वभौम प्रतिरूप है। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा मला या बुरा धार्मिक आदर्श भारत में हजारों वर्षो से प्रवाहमान रहा है। वह वातावरण में व्याप्त है, हमारे रक्त में घुल गया है, हमारी नसों की प्रत्येक बूँद के साथ सन सनाक है, हमारी शरीर रचना के साथ एकाकार हो गया है हमारे जीवन का प्राणतत्व बन गया है। क्या आप प्रतिक्रिया में उतनी ही ऊर्जा जाग्रत किये बिना शक्तिशाली नदी ने हजारों वर्षो में अपने लिऐ जो सरणि काटी है उसे भरे बिना उसे त्याग सकते हैं? क्या आप चाहते है कि गंगा अपने बर्फीले उद्गम को लौट जाये और नया मार्ग प्रारम्भ करें?[xii]

निष्कर्ष :-

विश्व के सम्मुख भारतीय चित्र को साहसी रूप से प्रस्तुत करने का कार्य स्वामी विवेकानन्द ने सम्पन्न किया। उनके प्रयत्नों की स्पष्ट छाप राष्ट्रीय जीवन पर पड़ी। नवयुवकों ने उनके ओजस्वी साहित्य पढ़ा। राष्ट्रीय जीवन को दासता से मुक्त कराने के लिऐ अपूर्व साहस लेकर बंगाल का नवयुवक देश के नवयुवकों का नेतृत्व करने के लिए आगे आया। उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय समाज में जहाँ एक तरफ धर्म के गीत गाये वहाँ उसे व्यवहारिक रुप से साहस का प्रतीक बताया। समाज में निर्भयता का वातावरण भर गया। भारतीय राष्ट्रवाद को धर्म से सम्बद्ध करके उन्होंने राष्ट्रवाद और धर्म दोनों की जड़ों को मजबूत किया। सच्चे वेदान्ती के नाते वह राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता के प्रतिनिधि बन गये। समाज को उन्होंने अपने गुरु की स्मृति में रामकृष्ण मिशन अर्पित किया। यह मिशन वेदान्ती आदर्शों के साथ-साथ सामाजिक दायित्वों की पूर्ति भी करता है। उनमें आधुनिक भारत के निर्माण की जिज्ञासा थी. जिसके लिए उन्होनें निर्माण किया और वह उसके प्रतीक भी बन गये।

REFERENCES

1. मुखर्जी, हीरेन्द्र नाथ इण्डिया स्ट्रगुलफार फ्रीडम
2. विवेकानन्द स्वामी- लैक्चर्स फ्रोम कोलम्बों टू अल्मोड़ा
3. स्वामीजी का शिकागों से मैसूर के महाराज को लिखा पत्र 23 जून 1894
4. दि हिन्दू समाचार पत्र) तमिलनाडु फरवरी 1897
5. नेहरू जवाहर लाल हिन्दुस्तान की कहानी
6. विवेकानन्द संचयन (सम्पादित) 'भारत का भविष्य'
7. 28 फरवरी को कलकत्ता अभिनन्दन का उत्तर
8. दिनकर रामधारी सिंह संस्कृति के चार अध्याय
9. नटराजन एस० ए सेन्चुरी आफ सोशल रिफार्म इन इण्डिया
10. स्विट्जर एलबर्ट इण्डियन बाट एण्ड इट्स डेवलपमेन्ट
11. लाइफ ऑफ स्वामी विवेकानन्द द्वितीय खण्ड
12. स्वामी विवेकानन्द ऑन इण्डिया एण्ड हर प्रॉब्लम्स